हफ़्तावार रिसाला : 381
Weekly Booklet : 381

Jannat Ke Bare Me Dilchasp Malumaat (Hindi)

जन्नत के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

सफ़हात 28

मा'लूमाती सुवाल जवाब 03
जन्नती फल दुन्यावी फलों के मुशाबेह क्यूं ? 09
जन्नतें कितनी हैं ? 16
दुन्या में जन्नत से आई हुई 18 चीज़ें 27

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **"जन्नत के बारे में दिलचस्प मा'लूमात"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

जन्नत के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 27 सफ़्हात का रिसाला "जन्नत के बारे में दिलचस्प मा'लूमात" पढ़ या सुन ले उसे मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जन्नत का अनोखा फल (दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत)

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, मौलाए काएनात ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** पाक ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है जिस का फल सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मक्खन से नर्म, शहद से भी मीठा और मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। इस दरख़्त की शाख़ें तर मोतियों की, तने सोने के और पत्ते ज़बरजद के हैं। इस दरख़्त का फल सिर्फ़ वोही खा सकेगा जो मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बहुत ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ेगा। (الحاوی للفتاوی، 2/48)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

दो घर

अल्लाह पाक ने इस दुन्या के इ़लावा दो और अ़ज़ीमुश्शान घर पैदा फ़रमाए हैं : एक "ने'मतों वाला घर" है जिसे जन्नत कहते हैं और दूसरा "सज़ा वाला घर" है जिसे दोज़ख़ कहते हैं। **अल्लाह** पाक ने जन्नत में अपने ईमान वालों के लिये कई त़रह़ की ऐसी ने'मतें जम्अ़ फ़रमाई हैं जिन्हें न किसी की आंखों

ने देखा, न कानों ने सुना, न किसी आदमी के दिल पर उन का ख़याल गुज़रा। जन्नत की ता'रीफ़ में जो मिसालें दी जाती हैं वोह सिर्फ़ समझाने के लिये हैं वरना दुन्या की सब से बेहतरीन शै को जन्नत की किसी चीज़ के साथ कुछ भी मुनासबत (Relevance) नहीं।

जन्नत कितनी बड़ी है ?

जन्नत के तलबगारो ! जन्नत को पैदा करने वाला, हमारा ख़ालिक़ो मालिक कुरआने करीम के पारह 4, **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 133 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُۙ
اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَۙ﴿۱۳۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ़ दौड़ो जिस की वुस्अ़त आस्मानों और ज़मीन के बराबर है। वोह परहेज़ गारों के लिये तय्यार की गई है।

इस आयत की तफ़्सीर में है : गुनाहों से तौबा, **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ को अदा कर के, नेकियों पर अ़मल और तमाम आ'माल में इख़्लास पैदा कर के अपने रब की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ जल्दी करो। फिर जन्नत की वुस्अ़त इस तरह बयान फ़रमाई कि लोग समझ सकें क्यूं कि लोग जो सब से वसीअ़ (या'नी बड़ी) चीज़ देखते हैं वोह आस्मानो ज़मीन ही हैं, इस से वोह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अगर तमाम आस्मानों और ज़मीनों को तरतीब से एक लाइन में रख कर जोड़ दिया जाए तो जो वुस्अ़त बनेगी उस से जन्नत की चौड़ाई का अन्दाज़ा किया जा सकता है कि जन्नत कितनी बड़ी है।

(तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 4, आले इमरान, तहूतल आयह : 133, 2/53)

मा'लूमाती सुवाल जवाब

अल्लाह पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हिरक़्ल बादशाह ने लिखा कि जब जन्नत इतनी बड़ी है कि आस्मान और ज़मीन उस में आ जाएं तो फिर दोज़ख़ कहां है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब में फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللّٰه जब दिन आता है तो रात कहां होती है ?

मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते अ़ल्लामा नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : इस फ़सीह़ो बलीग़ गुफ़्त्गू के मा'ना बहुत बारीक हैं, ज़ाहिरी त़ौर पर मा'ना येह है कि दौरए फ़लकी (या'नी आस्मान के गिर्द) से एक जानिब में दिन ह़ासिल होता है तो इस के दूसरी जानिब में शब होती है। इसी त़रह़ जन्नत जानिबे बाला (या'नी ऊंची त़रफ़) में है और दोज़ख़ नीचे की त़रफ़। मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से यहूदियों ने येह सुवाल किया तो आप ने भी येही जवाब दिया था, इस पर उन्हों ने अ़र्ज़ की : तौरैत में भी इसी त़रह़ समझाया गया है। मत़लब येह है कि **अल्लाह** पाक की क़ुदरतो इख़्तियार से कुछ बईद (या'नी दूर) नहीं जिस शै को जहां चाहे रखे, येह इन्सान की तंगिये नज़र है कि किसी चीज़ के बड़े होने से ह़ैरान हो कर पूछने लगता है कि ऐसी बड़ी चीज़ कहां समाएगी ? (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 4, आले इमरान, तह़्तल आयह : 131 स. 120)

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का
ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 37)

शर्हे कलामे रज़ा : अल्लाह पाक की बारगाह में इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه जन्नत की अ़ज़ीम ने'मतों का ज़िक्र करते हुए अ़र्ज़ करते हैं : **या अल्लाह** पाक ! जन्नत में नेक बन्दों को कई ने'मतों और दा'वतों से

नवाज़ा जाएगा, मैं भी उस दा'वत का इन्तिज़ार कर रहा हूं। तेरे फ़ज़्लो करम से ख़ैर से वोह वक़्त आए जब हम "जन्नती ने'मतों" से लुत्फ़ अन्दोज़ हों।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जन्नत कहां है ?

जन्नत कहां है ? इस बारे में उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के मुख़्तलिफ़ इर्शादात हैं अलबत्ता ज़ियादा सहीह़ बात येह है कि जन्नत सातवें आस्मान के ऊपर है क्यूं कि कुरआने करीम में है : ﴿ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝ ﴾ (پ27، النجم:14،15) **तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान :** "सिद्‌रतुल मुन्तहा के पास, उस के पास जन्नतुल मावा है।" एक ह़दीस में है कि जन्नत की छत रह़मान का अ़र्श है।

(فردوس الاخبار، 1/449، حدیث:3344)

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه से पूछा गया कि जन्नत आस्मान में है या ज़मीन में ? फ़रमाया : कौन सी ज़मीन और कौन सा आस्मान ऐसा है जिस में जन्नत समा सके ? अ़र्ज़ किया गया : फिर कहां है ? फ़रमाया : आस्मानों के ऊपर और अ़र्श के नीचे।

(تفسیر خازن، پ4، ال عمران، تحت الآیۃ:133، 1/301)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जन्नत निहायत अ़ज़ीमुश्शान जगह है, **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उस के दीदार का मक़ाम है। कुरआने करीम में जन्नत की अ़ज़मतो शान को कई बार बयान किया गया है। **अल्लाह** पाक अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ हमें जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए।

बिला ह़िसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

जन्नत कितनी बड़ी है ?

जन्नत की अ़ज़मत की भी क्या ही बात है। जन्नत कितनी बड़ी है। येह **अल्लाह** पाक और उस के बताने से उस का रसूल (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही जानते हैं। खुलासा येह है कि जन्नत में 100 दरजे हैं, हर दो दरजों में इतना फ़ासिला है जितना आस्मान और ज़मीन के दरमियान है। "तिरमिज़ी शरीफ़" की ह़दीसे पाक में है कि : अगर तमाम आ़लम एक दरजे में जम्अ़ हों तो सब के लिये वसीअ़ है। (ترمذی،4/239،حدیث:2540)

जन्नत की ख़ूब सूरती

इन्सान दुन्या में ख़ूब सूरत मन्ज़र देख कर बे साख़्ता बोल उठता है कि जन्नत जैसा मन्ज़र है या'नी एक आ़म इन्सान के ज़ेहन में भी जन्नत का नक़्शा ह़सीनो जमील है। लेकिन याद रखिये ! दुन्या के सारे ख़ूब सूरत मनाज़िर जन्नत के सामने कुछ ह़ैसिय्यत नहीं रखते क्यूं कि जन्नत इतनी ख़ूब सूरत है कि अगर जन्नत की नाखुन भर चीज़ दुन्या में ज़ाहिर हो तो तमाम आस्मान और ज़मीन उस से आरास्ता हो जाएं और अगर जन्नती का कंगन ज़ाहिर हो तो आफ़्ताब की रोशनी मिटा दे, जैसे आफ़्ताब सितारों की रोशनी मिटा देता है। (ترمذی،4/241،حدیث:2547مفہوماً)

जन्नत में दाख़िल होने का बयान

जन्नत के दरवाज़े इतने चौड़े होंगे कि एक बाज़ू से दूसरे तक तेज़ घोड़े की सत्तर बरस की राह होगी (या'नी एक तेज़ रफ़्तार घोड़ा सत्तर साल तक दौड़ता रहे, इतने बड़े दरवाज़े होंगे)। (مسند امام احمد،5/475،حدیث:16206ملتقطاً) फिर भी जन्नत में जाने वालों की इतनी ज़ियादा ता'दाद होगी कि कन्धे से कन्धा छिलता होगा बल्कि भीड़ की वज्ह से दरवाज़ा चरचराने लगेगा। (बहारे शरीअ़त, 1/154, हिस्सा : 1) पहला गुरौह जो जन्नत में जाएगा, उन के चेहरे ऐसे रोशन होंगे जैसे चौदहवीं रात का चांद और दूसरा गुरौह जैसे कोई निहायत रोशन सितारा, जन्नती

सब एक दिल होंगे, उन के आपस में कोई इख़्तिलाफ़ व बुग़्ज़ न होगा।

(बहारे शरीअ़त, 1/157, हि़स्सा : 1)

जन्नत में दरख़्त कैसे होंगे ?

सहा़बिये रसूल ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने एक छोटी सी लकड़ी उठा कर फ़रमाया : अगर जन्नत में तुम इतनी लकड़ी भी तलाश करोगे तो तुम्हें नज़र नहीं आएगी। अ़र्ज़ की गई : फिर खजूर के और दीगर दरख़्त कहां होंगे ? फ़रमाया : उन की जड़ें मोती और सोने की होंगी और ऊपरी हि़स्से में फल होंगे। जन्नत में एक दरख़्त है जिस के साए में सो (100) बरस तक तेज़ घोड़े पर सुवार चलता रहे फिर भी साया ख़त्म न हो।

(अल बुदूरुस्साफ़िरह (उर्दू), स. 654, البدور السافرۃ، ص367)

जन्नती मह़ल और उन के दरो दीवार

जन्नत में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जवाहिर (या'नी क़ीमती पथ्थरों) के ऐसे साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ मह़ल हैं जिन का अन्दर का हि़स्सा बाहर से और बाहर का अन्दर से दिखाई देता है। जन्नत की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं, एक ईंट सोने की, एक चांदी की, ज़मीन ज़ा'फ़रान की, कंकरियों की जगह मोती और याक़ूत (हैं)। और एक रिवायत में है कि जन्नते अ़दन की एक ईंट सफ़ेद मोती की है, एक याक़ूते सुर्ख़ की, एक ज़बरजद सब्ज़ की, और मुश्क का गारा है और घास की जगह ज़ा'फ़रान है, मोती की कंकरियां, अ़म्बर की मिट्टी, जन्नत में एक एक मोती का ख़ैमा होगा जिस की बुलन्दी साठ मील (होगी)।

(बहारे शरीअ़त, 1/154, हि़स्सा : 1)

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ जन्नती मह़ल का शौक़ दिलाते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : इस बात पर बड़ा तअ़ज्जुब है कि

अगर तेरे साथी या पड़ोसी माल या ऊंचे मकान में तुझ से आगे बढ़ जाएं तो तुझे येह बात ना गवार महसूस होती है और तेरा सीना तंग हो जाता है और ह़सद की वज्ह से तेरी ज़िन्दगी मुश्किल हो जाती है जब कि तेरे लिये सब से बेहतर ह़ालत येह है कि तुम जन्नत में अपना ठिकाना बनाओ ह़ालां कि कई ऐसे लोग हैं जो जन्नत में नेकियों के ज़रीए तुम से आगे बढ़ने वाले हैं और दुन्या अपने तमाम मालो अस्बाब के साथ भी उन के बराबर नहीं हो सकती।

(احیاء العلوم، 5/302, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 5/744)

सफ़े मातम उठे ख़ाली हो ज़िन्दां टूटें ज़न्जीरें गुनहगारो चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 38)

शर्हे कलामे रज़ा : इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه क़ियामत के दिन नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के पुरकैफ़ मन्ज़र का तसव्वुर कर के बयान करते हैं : **अल्लाह** पाक की इजाज़तो रह़मत से जब हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुनहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे और जहन्नम में जाने वालों को शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ैरात मिलेगी, फिर क़ियामत का मन्ज़र यूं होगा कि ह़िसाबो किताब में परेशान ह़ाल उठेंगे, जहन्नम की सज़ा से रिहाई मिलेगी और आवाज़ आएगी : गुनहगारो ! चलो चलो जन्नत की त़रफ़ चलो, **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जन्नती मश्रूबात

दुन्या का लज़ीज़ से लज़ीज़ शरबत और ज्यूस जन्नती मश्रूबात पर क़ुरबान क्यूं कि दुन्यावी शरबत और ज्यूस का मज़ा मुंह में थोड़ी देर तक रहता है

जब कि जन्नत में चार दरिया हैं, एक पानी का, दूसरा दूध का, तीसरा शह्द का और चौथा शराब का, फिर इन से नहरें निकल कर हर जन्नती के मकान में जारी होती हैं, वहां की नहरों की शान येह है कि वोह ज़मीन खोद कर नहीं बहतीं बल्कि ज़मीन के ऊपर चलती हैं, नहरों का एक किनारा मोती का, दूसरा याक़ूत का और नहरों की ज़मीन ख़ालिस मुश्क की, वहां की शराब दुन्या की सी नहीं जिस में बदबू, कड़वाहट और नशा होता है और पीने वाले बे अ़क़्ल, आपे से बाहर हो कर बेहूदा बकते हैं, वोह पाक शराब इन सब बातों से पाको मुनज़्ज़ह है। (बहारे शरीअ़त, 1/155, हिस्सा : 1) **अल्लाह** पाक कुरआने करीम के पारह 30 **सूरतुल मुत़फ़्फ़िफ़ीन** की आयत नम्बर 25 ता 28 में इर्शाद फ़रमाता है :

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿۲۵﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَ فِیْ ذٰلِكَ فَلْیَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ﴿۲۶﴾
وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِیْمٍ ﴿۲۷﴾ عَیْنًا یَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿۲۸﴾

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : उन्हें साफ़ सुथरी ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी जिस पर मोह्र लगाई हुई होगी। उस की मोह्र मुश्क (की) है और ललचाने वालों को तो इसी पर ललचाना चाहिये। और उस की मिलावट तस्नीम से है। एक चश्मा जिस से मुक़र्रब बन्दे पियेंगे।

"तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" में इन आयात की तफ़्सीर कुछ इस त़रह़ बयान की गई है : जन्नत में उन्हें साफ़ सुथरी ख़ालिस शराब पिलाई जाएगी जिस के बरतनों पर मोह्र लगाई हुई होगी और अबरार ही उन की मोह्र तोड़ेंगे, उन बरतनों पर लगी मोह्र मुश्क की बनी हुई है और ललचाने वालों को **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त की त़रफ़ सब्क़त कर के और बुराइयों से बाज़ रह कर, इसी पर ललचाना चाहिये ता कि उन्हें मुश्क की मोह्र लगी येह शराब ह़ासिल हो और उस शराब में

तस्नीम मिली हुई है जो कि जन्नत की शराबों में सब से आ'ला है और तस्नीम शराब का वोह चश्मा है जिस से सिर्फ़ **अल्लाह** पाक के मुक़र्रब बन्दे पियेंगे और बाक़ी जन्नतियों की शराबों में शराबे तस्नीम के चन्द क़त्रे मिलाए जाएंगे। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 30, अल मुतफ़्फ़िफ़ीन, तह़तल आयह : 25 ता 28, 10/580)

जन्नती शराब किस के लिये

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो येह पसन्द करता है कि **अल्लाह** पाक उसे आख़िरत में शराब पिलाए तो वोह उसे दुन्या में छोड़ दे। (معجم اوسط، 6/312، حدیث:8879)

चश्मे तर और क़ल्बे मुज़्तर दे *अपनी उल्फ़त की मै पिला या रब*

(वसाइले बख़्शिश, स. 79)

जन्नती खाने

मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में खाने का Taste (या'नी ज़ाइक़ा) चेक करने के लिये जाने वालों को जन्नती खानों का शौक़ रखना चाहिये। **अल्लाह** पाक ने जन्नतियों के खानों का ज़िक्र कुरआने करीम में फ़रमाया है कि फल, मेवे, मोटे मोटे परिन्दे, मन्न व सल्वा, शह्द, दूध और बे शुमार क़िस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे, वोह जो चाहेंगे फ़ौरन उन के सामने मौजूद होगा अगर किसी परिन्दे को देख कर उस का गोश्त खाने को दिल करेगा तो उसी वक़्त वोह परिन्दा भुना हुवा उन के पास आ जाएगा अगर पानी वग़ैरा की ख़्वाहिश हो तो पियाले ख़ुद हाथ में आ जाएंगे, उन में ठीक अन्दाज़े के मुताबिक़ पानी, दूध, शराब, शह्द होगा कि उन की ख़्वाहिश से एक क़त्रा कम न ज़ियादा, पीने के बा'द जहां से आए थे ख़ुद ब ख़ुद वहां चले जाएंगे। (बहारे शरीअ़त, 1/155, ह़िस्सा : 1)

जन्नती फल दुन्यावी फलों के मुशाबेह क्यूं ?

कुरआने करीम में जन्नती फलों के बारे में वज़ाह़त इर्शाद फ़रमाई गई है

कि वोह फल दुन्यावी फलों से मिलते जुलते होंगे क्यूं कि जन्नती दुन्यावी फलों से मानूस थे लेकिन उन का ज़ाएक़ा दुन्या के फलों से बहुत आ'ला होगा। पारह 1 **सूरतुल बक़रह,** आयत नम्बर 25 में इर्शाद होता है :

كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِیْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَ اُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ

तरजमए कन्ज़ुल इरफ़ान : जब उन्हें उन बाग़ों से कोई फल खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे, येह तो वोही रिज़्क़ है जो हमें पहले दिया गया था हालां कि उन्हें मिलता जुलता फल (पहले) दिया गया था।

जन्नत में निज़ामे इन्हिज़ाम

जन्नत में नजासत, गन्दगी, थूक, बदन का मैल बिल्कुल न होंगे, एक ख़ुश्बूदार आराम देह डकार आएगी, ख़ुश्बूदार आराम देह पसीना निकलेगा, सब खाना हज़्म हो जाएगा, डकार और पसीने से मुश्क की ख़ुश्बू निकलेगी।

(مسلم، ص1165، حدیث:7152ملخصاً)

जन्नतियों की ख़िदमत

कम से कम हर जन्नती के सिरहाने दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे, ख़ादिमों में हर एक के एक हाथ में चांदी का, दूसरे हाथ में सोने का पियाला होगा और हर पियाले में अलग अलग रंग की ने'मत होगी, जितना खाता जाएगा लज़्ज़त कम न होगी बल्कि बढ़ेगी, हर निवाले में सत्तर (70) मज़े और हर मज़ा दूसरे से अलग होगा और वोह मज़े एक साथ महसूस होंगे, एक मज़े का एहसास दूसरे मज़े में फ़र्क़ नहीं डालेगा। (बहारे शरीअ़त, 1/157, हिस्सा : 1 मुलख़्ख़सन)

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का   ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 37)

जन्नतियों की शानो शौकत

उ़म्दा और क़ीमती लिबास पहनने का शौक़ रखने वालो ! अगर जन्नत का कपड़ा दुन्या में पहना जाए तो जो देखे बेहोश हो जाए और लोगों की निगाहें उस को बरदाश्त न कर सकें। (बहारे शरीअ़त, 1/158, हिस्सा : 1) जन्नतियों के लिबास पुराने नहीं होंगे। (बहारे शरीअ़त, 1/157, हिस्सा : 1) जन्नतियों के सर, पल्कों और भवों के सिवा बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब बे रीश होंगे, सुर्मा लगी आंखें, तीस बरस की उ़म्र के मा'लूम होंगे, (مسند امام احمد، 3/393، حدیث:9386) कभी इस से ज़ियादा मा'लूम न होंगे। (ترمذی، 4/254، حدیث:2571) जन्नतियों की जवानी कभी ख़त्म न होगी। (बहारे शरीअ़त, 1/159, हिस्सा : 1) नित नए फ़ेशन अपना कर लोगों को अच्छा नज़र आने वालों को जन्नत में ले जाने वाले आ'माल की कोशिश करनी चाहिये।

जन्नती हूरों का हुस्नो जमाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हूर (या'नी जन्नती औ़रत) अगर ज़मीन की त़रफ़ झांके तो ज़मीन से आस्मान तक रोशन हो जाए और ख़ुश्बू से भर जाए और चांद सूरज की रोशनी चली जाए और उस का दोपट्टा दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ दुन्या में है इस) से बेहतर है। (بخاری، 4/264، حدیث:6568) हर जन्नती को हूरे ईन (या'नी बड़ी आंखों वाली जन्नती औ़रतों) में से कम से कम दो बीबियां ऐसी मिलेंगी कि सत्तर सत्तर जोड़े पहने होंगी फिर भी उन लिबासों और गोश्त के बाहर से उन की पिंडलियों का मग़्ज़ ऐसे दिखाई देगा जैसे सफ़ेद शीशे में शराबे सुर्ख़ दिखाई देती है और येह इस वज्ह से कि **अल्लाह** पाक ने उन्हें याक़ूत की त़रह फ़रमाया, याक़ूत में सूराख़ कर के अगर डोरा डाला जाए तो ज़रूर बाहर से दिखाई देगा। आदमी अपने चेहरे को उस के रुख़्सार में आईने से भी ज़ियादा साफ़ देखेगा और उस हूर पर अदना दरजे का जो मोती होगा वोह ऐसा होगा कि मशरिक़ से मग़रिब तक रोशन कर दे। (बहारे शरीअ़त, 1/157, हिस्सा : 1)

जब कोई बन्दा जन्नत में जाएगा तो उस के सिरहाने और पाउं की जानिब दो हूरें इतनी अच्छी आवाज़ से **अल्लाह** पाक की ता'रीफ़ और पाकी बयान करेंगी कि मख़्लूक़ ने कभी इतनी प्यारी आवाज़ नहीं सुनी होगी।

(معجم کبیر 8/95،حدیث:7478)

सब से ज़ियादा हूरें किस के लिये ?

ऐ आशिक़ाने रसूल ! **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उठते बैठते, चलते फिरते हर वक़्त दुरूदे पाक पढ़ते रहिये कि फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जन्नत में सब से ज़ियादा हूरें उस शख़्स को मिलेंगी जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद पढ़ने वाला होगा।" (افضل الصلوات للنبہانی، ص25)

क्यूं न ज़ेबा हो तुझे ताजवरी तेरे ही दम की है सब जल्वा गरी
मलको जिन्नो बशर हूरो परी जान सब तुझ पे फ़िदा करते हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 114)

शर्हे क़लामे रज़ा : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** पाक की अ़ता से दुन्या व आख़िरत की बादशाही आप ही को लाइक़ है क्यूं कि दुन्या व आख़िरत की सारी बहारें, ने'मतें आप ही के दम क़दम से हैं, आप दुन्या में तशरीफ़ न लाते तो **अल्लाह** पाक इस दुन्या को पैदा न फ़रमाता, ख़ालिके़ कौनैन की अ़ता से आप मालिके कौनैन हैं। फ़िरिश्ते, जिन्न, इन्सान, हूर और परी सब आप पर कु़रबान होते हैं।

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 178)

जन्नतियों की सुवारियां और ख़ुद्दाम

जन्नत में दाख़िले की ख़्वाहिश रखने वालो ! जन्नती आपस में मिलना चाहेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के पास उड़ कर चला जाएगा। और एक रिवायत में है कि उन के पास निहायत आ'ला दरजे की सुवारियां और घोड़े लाए जाएंगे वोह उन पर सुवार हो कर जहां चाहेंगे जाएंगे। (الترغیب والترہیب،4/304،حدیث:115)

जन्नतियों को मिलने वाली ने'मतों का बयान

मर्तबे और दरजे के ए'तिबार से सब से छोटे जन्नती के लिये अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर (72) बीवियां होंगी और उन को ऐसे ताज मिलेंगे कि जिन का सब से छोटा मोती मशरिक़ो मग़रिब के दरमियान रोशन कर दे। (ترمذی،4/254،حدیث:2571) और अगर मुसल्मान औलाद की ख़्वाहिश करे तो उस का ह़म्ल और वज़्अ़ (या'नी बच्चे का पैदा होना) और पूरी उ़म्र (या'नी तीस साल की), ख़्वाहिश करते ही एक लम्हे में हो जाएगी। (ترمذی،4/254،حدیث:2572)

जन्नत में रात और दिन नहीं होगा

जन्नत की ज़िन्दगी बहुत प्यारी और हमेशा रहने वाली है, इसी वज्ह से जन्नत में नींद नहीं कि नींद एक क़िस्म की मौत है और जन्नत में मौत नहीं। ह़ज़रते ज़ुहैर बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जन्नत में न रात है और न ही सूरज और चांद, जन्नती हमेशा नूर में रहेंगे, उन के लिये रात और दिन की मिक़्दार होगी, रात की पहचान उन्हें पर्दे लटकाए जाने और दरवाज़े बन्द किये जाने से होगी जब कि दिन की पहचान पर्दे हटाए जाने और दरवाज़े खोले जाने से होगी।

(अल बदूरुस्साफ़िरह (उर्दू), स. 667, البدور السافرۃ،ص375)

अल्लाह पाक की बारगाह में शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़र्ज़ करते हैं :

दाख़िले ख़ुल्द हम को जो फ़रमाए तू   हम हों और हूरो ग़िल्मां लबे आब जू
और जामे तहूर और मीना सबू   देखें आ'दा तो रह जाएं पी कर लहू
अल्लाहू, अल्लाहू, अल्लाहू, अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत का मौसिम

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जन्नत में मौसिम दरमियाना रहेगा, उस में न गर्मी होगी न सर्दी। (البدور السافرۃ، ص512)

जन्नत की सबसे बड़ी ने'मत

हज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मुलाक़ात हुई तो हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** पाक से सुवाल करता हूं कि वोह मुझे और आप को जन्नत के बाज़ार में इकठ्ठा कर दे। हज़रते सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने (हैरान हो कर) कहा : क्या जन्नत में बाज़ार भी होगा ? हज़रेत अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : हां ! मुझे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी है कि जन्नत वाले जब जन्नत में दाख़िल होंगे तो जन्नत के दरजात में अपने आ'माल के मुताबिक़ दाख़िल होंगे, फिर उन्हें दुन्या के दिनों के हिसाब से एक हफ़्ते में इजाज़त दी जाएगी तो वोह अपने रब की ज़ियारत करेंगे और उन के सामने **अल्लाह** पाक का अ़र्श ज़ाहिर होगा और **अल्लाह** पाक उन पर जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमाएगा तो उन के लिये नूर के मिम्बर, मोतियों के मिम्बर, याक़ूत और ज़बरजद के मिम्बर, सोने और चांदी के मिम्बर रखे जाएंगे, उन में से अदना दरजे वाले जन्नती हालां कि उन में अदना कोई नहीं, मुश्क और काफ़ूर के टीले पर होंगे और वोह येह तसव्वुर न करेंगे कि कुरसियों वाले उन से आ'ला जगह में हैं।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम अपने रब को देखेंगे ? इर्शाद फ़रमाया : हां ! क्या तुम सूरज को और चौदहवीं रात में चांद को देखने में शक करते हो ? हम ने अ़र्ज़ की : नहीं । इर्शाद फ़रमाया : ऐसे ही तुम अपने रब को देखने में शक न करोगे, उस मजलिस में हर एक के सामने **अल्लाह** पाक बे हिजाब मौजूद होगा ह़त्ता कि उन में से एक शख़्स से इर्शाद फ़रमाएगा : ऐ फ़ुलां के बेटे फ़ुलां ! क्या तुझे वोह दिन याद है जब तूने ऐसा ऐसा कहा था ? **अल्लाह** पाक उसे उस की बा'ज़ दुन्यवी बद अ़ह्दियां याद दिलाएगा तो वोह बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ **अल्लाह** ! क्या तूने मुझे बख़्श नहीं दिया ? **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाएगा : हां ! तू मेरी वसीअ़ रह़मत की वज्ह से ही तो अपने इस दरजे में पहुंचा । वोह उसी ह़ालत में होंगे कि उन के ऊपर बादल छा जाएगा और उन पर ऐसी ख़ुश्बू बरसाएगा कि उस जैसी ख़ुश्बू कभी किसी चीज़ में न पाई होगी, और हमारा रब इर्शाद फ़रमाएगा : उस इन्आ़मो इकराम की त़रफ़ जाओ जो मैं ने तुम्हारे लिये तय्यार किया हुवा है और उस में से जो चाहो ले लो । तब हम उस बाज़ार में पहुंचेंगे जिसे फ़िरिश्तों ने घेरा होगा, उस में वोह चीज़ें होंगी जिन की मिस्ल न आंखों ने देखी, न कानों ने सुनी और न दिलों पर उन का ख़याल गुज़रा, तब हम जो चाहेंगे वोह हमें दे दिया जाएगा, वहां न तो ख़रीद होगी न फ़रोख़्त, और उस बाज़ार में जन्नती एक दूसरे से मिलेंगे और बुलन्द दरजे वाला ख़ुद आएगा और अपने से नीचे दरजे वाले से मिलेगा ह़ालां कि उन में नीचा कोई नहीं तो इस पर जो लिबास येह देखेगा वोह उसे पसन्द आएगा, अभी उस की आख़िरी बात ख़त्म न होगी कि उसे अपने ऊपर मौजूद लिबास उस से अच्छा मह़सूस होगा, येह इस लिये होगा कि जन्नत में कोई ग़मगीन न हो, फिर हम अपने घरों की त़रफ़ लौटेंगे तो हम से हमारी बीवियां मिलेंगी और कहेंगी : मरह़बा, ख़ुश आमदीद ! जिस वक़्त आप यहां से गए थे उस वक़्त के मुक़ाबले में अब

आप का हुस्नो जमाल बहुत ज़ियादा है। तब हम कहेंगे : आज हमें अपने रब्बे करीम के दरबार में बैठना नसीब हुवा था, (खुदाए) जब्बार के हुज़ूर हमें हम नशीनी नसीब हुई, हमारा हक़ येही था कि हम ऐसे लौटें जैसे अब लौटे हैं। (ترمذی،4/246،حدیث:2558)

क्या औ़रतों को जन्नत में दीदारे इलाही होगा

दीदारे इलाही के बारे में सह़ीह़ बात येह है कि (जन्नती मर्द और औ़रत) दोनों को होगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/517)

अल्लाह पाक की ख़ास इनायत

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : जन्नत की ने'मतों में सब से बड़ी ने'मत येह होगी कि **अल्लाह** पाक जन्नतियों से राज़ी होगा। कभी उन पर नाराज़ न होगा। मह़बूब की रिज़ा आ़शिक़ के लिये बड़ी ने'मत है। ख़याल रहे कि **अल्लाह** पाक की रिज़ा और **अल्लाह** पाक का दीदार किसी अ़मल का बदला न होगा। येह ख़ास अ़त़िय्यए रब होगा। (नूरुल इरफ़ान, स. 315)

जन्नतें कितनी हैं ?

जन्नतों की ता'दाद आठ है जिन के नाम येह हैं : (1) दारुल जलाल (2) दारुल क़रार (3) दारुस्सलाम (4) जन्नते अ़दन (5) जन्नते मावा (6) जन्नते ख़ुल्द (7) जन्नतुल फ़िरदौस (8) जन्नते नईम। (تفسیر روح البیان،1/82ملتقطاً)

जन्नत की दुआ़

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने तीन मरतबा **अल्लाह** पाक से जन्नत का सुवाल किया तो जन्नत कहती है : ऐ **अल्लाह**! इस को जन्नत में दाख़िल कर दे और जिस शख़्स ने तीन मरतबा दोज़ख़ से पनाह मांगी तो दोज़ख़ कहती है : ऐ **अल्लाह**! इस को दोज़ख़ से पनाह में रख। (ترمذی،4/257،حدیث:2581)

कौन सी जन्नत की दुआ़ मांगी जाए ?

एक और ह़दीसे पाक में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम **अल्लाह** पाक से सुवाल करो तो "फ़िरदौस" का सुवाल करो। (ترمذی،4/238،حدیث:2538)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं ? जन्नतुल फ़िरदौस कौन सी जन्नत है ? हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़ज़राते अहले बैत व सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जन्नतुल फ़िरदौस में होंगे इसी लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने अश्आ़र और दुआ़ओं में अक्सर जन्नतुल फ़िरदौस मांगते हैं : اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْنَا جَنَّةَ الْفِرْدَوْسِ بِغَیْرِ حِسَابٍ ।

मेरी सरकार के क़दमों में ही اِنْ شَآءَ اللّٰہ मेरा फ़िरदौस में अ़त्तार ठिकाना होगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 185)

हुक्मे ह़दीस पर अ़मल करने की निय्यत से **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ करते हैं : **या अल्लाह** पाक ! ब वसीलए ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें बिला ह़िसाबो किताब जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़री नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! हमें बिग़ैर ह़िसाब व किताब के जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! हमें जन्नतुल फ़िरदौस में अपने आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हश्त ख़ुल्द आएं वहां कस्बे लत़ाफ़त को रज़ा चार दिन बरसे जहां अब्रे बहाराने अ़रब

(ह़दाइके बख़्शिश, स. 61)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

चलो चलो जन्नत की जानिब चलो

जन्नत के त़लबगारो ! **अल्लाह** पाक ने ईमान वालों के लिये जन्नत में कितनी प्यारी प्यारी और आ'ला ने'मतें पैदा फ़रमाई हैं, **अल्लाह** पाक अपनी रह़मत से हमें भी उन ने'मतों से नवाज़े और बिला ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िला नसीब फ़रमाए। दुन्या में ख़ूब सूरत मनाज़िर देखने के लिये लोग हज़ारों, लाखों रुपै ख़र्च कर के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर जाते हैं बल्कि एक मुल्क से दूसरे मुल्क भी सफ़र इख़्तियार करते हैं। दुन्या के ख़ूब सूरत तरीन मनाज़िर जन्नत की ख़ूब सूरती के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। काश ! पहाड़ों, मुश्किल रास्तों पर चल कर बल्कि बा'ज़ अवक़ात अपनी जान ख़तरे में डाल कर दुन्या की फ़ना हो जाने वाली ख़ूब सूरती देखने के लिये जाने वालों के दिलों में हमेशा रहने वाली जन्नत की ख़ूब सूरती की ह़िर्स पैदा हो। दुन्या का ह़सीन से ह़सीन मन्ज़र देखें तो येह तसव्वुर करें ! जिस रब ने फ़ना हो जाने वाली इस दुन्या को इतना ख़ूब सूरत बनाया है जो देखने के ए'तिबार से उस के फ़रमां बरदार और गुनहगार दोनों के लिये बराबर है तो उस ख़ुदा ने अपनी जन्नत जो सिर्फ़ नेकों और फ़रमां बरदारों के लिये बनाई है वोह कितनी ख़ूब सूरत होगी। वोह भी ऐसी जो कभी ख़त्म न होगी, चन्द मिनट और चन्द लम्ह़ात के लिये नहीं बल्कि उस की रह़मत से जन्नत में दाख़िल होने वाले को हमेशा की ज़िन्दगी नसीब होगी। काश ! जन्नत पाने के लिये नेक आ'माल करने का शौक़ पैदा हो। दुन्या की थोड़े दिनों की सैरो तफ़रीह़ (या'नी Outing) के लिये और ख़ूब सूरत मनाज़िर देखने के लिये मशक़्क़त बरदाश्त की जा सकती है तो जन्नत के ह़ुसूल के लिये नेकियां करने की कोशिश क्यूं नहीं होती।

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जन्नत की ह़क़ीक़त और जन्नतियों की ने'मतों, ख़ुशियों का तसव्वुर कर के

ग़ौर करो और उस शख़्स की ह़सरत का अन्दाज़ा करो जिस ने जन्नत के बदले सिर्फ़ दुन्या पर क़नाअ़त की और जन्नत से मह़रूम हो गया।

(احیاء العلوم، جلد 5/303 ملخصًا)

जन्नत के त़लबगारो ! जन्नत को इ़बादत की मशक़्क़तों से ढांपा गया है। दुन्या की पचास, साठ साल की मुख़्तसर ज़िन्दगी इ़बादत में गुज़ार कर हमेशा की ज़िन्दगी राह़त और सुकून में गुज़ारिये। नफ़्स पर मशक़्क़त कर के, इ़बादतों और रियाज़तों में वक़्त गुज़ार कर सुन्नतों पर अ़मल कर के, नेकी की दा'वत दे कर, गुनाहों से बच कर बल्कि दूसरों को बचा कर ज़िन्दगी गुज़ारने वाला, **अल्लाह** करीम की रह़मत से जन्नत में दाख़िल होगा। यक़ीनन जन्नत **अल्लाह** पाक की रह़मत ही से इनायत होगी, चूंकि जन्नत में दाख़िले के लिये उसी ने हमें नेक आ'माल करने और गुनाहों से बचने का हुक्म फ़रमाया है इस लिये हमें कोशिश करनी चाहिये कि हम उस के फ़रमां बरदार बन्दे बन जाएं। **अल्लाह** पाक अपनी रह़मत, अपने करम और अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हम गुनहगारों को अपने पाकीज़ा घर जन्नत में बिला ह़िसाबो किताब दाख़िला नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

यूं तो हर नेक काम जन्नत में ले जा सकता है, अब चन्द उन नेक आ'माल का बयान किया जाता है जिन पर अ़मल करने वालों के बारे में अह़ादीसे मुबारका और रिवायात में जन्नत की ख़ुश ख़बरियां दी गई हैं। **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये इन पर अ़मल करना जन्नत में दाख़िले का सबब बन सकता है।

﴾1﴿ कलिमए इस्लाम

मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه से

रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ" का यक़ीन रखते हुए मरा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।

(مسند ابو داود، ص265، حدیث:1965)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : येह इस्लाम का वोह "बुन्यादी कलिमा" है जिस पर इस्लाम की पूरी इ़मारत क़ाइम है। येह कलिमा बिला शुबा जन्नत में ले जाने वाला अ़मल बल्कि जन्नत में ले जाने वाले तमाम आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक कामों) की अस्ल व बुन्याद है। ह़दीस में जहां सिर्फ़ "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ" ज़िक्र किया गया है उस से मुराद पूरा कलिमा या'नी لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللہِ है। (बिहिश्त की कुन्जियां, स. 33)

﴾2﴿ सुन्नतों पर अ़मल

सुन्नतों पर अ़मल न सिर्फ़ जन्नत में दाख़िल होने का सबब है बल्कि सुन्नतों पर अ़मल करने वाले ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल जन्नत में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाएंगे जैसा कि **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से हम गुनहगारों को जन्नत में ले जाने वाले आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکوٰۃ المصابیح، 1/55، حدیث:175)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

﴾3﴿ जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं

ह़दीसे पाक में है : जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और फिर आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो।

(دارمی، 1/196، حدیث:716)

﴾4﴿ मस्जिद बनाइये, जन्नती महल पाइये

अल्लाह पाक की अ़ता से मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो **अल्लाह** पाक के लिये एक मस्जिद बनाएगा तो **अल्लाह** पाक उस के लिये जन्नत में एक घर बना देगा। (ابن ماجه، 1/408، حديث:737)

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मस्जिद छोटी बनाए या बड़ी, अकेला बनाए या दूसरों के साथ मिल कर अगर निय्यत में इख़्लास है तो اِنْ شَآءَ اللّٰه येह ही सवाब (या'नी जन्नत में घर) है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/183)

﴾5﴿ नमाज़

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : "अगर बन्दा वक़्त में नमाज़ क़ाइम रखे तो मेरे बन्दे का मेरे ज़िम्मए करम पर अ़ह्द है कि उसे अ़ज़ाब न दूं और बे ह़िसाब जन्नत में दाख़िल करूं।" (الفردوس بماثور الخطاب، 3/171، حديث:4455)

पढ़ते रहो नमाज़ तो चेहरे पे नूर है पढ़ता नहीं नमाज़ वोह जन्नत से दूर है

﴾6﴿ सुन्नते मुअक्कदा

अल्लाह पाक की रह़मत भरी जन्नत की चाहत में बेताब हो जाइये और इसे पाने की कोशिश तेज़ तर कर दीजिये। फ़र्ज़ नमाज़ के साथ साथ सुन्नते मुअक्कदा की आ़दत बनाइये और जन्नत में दाख़िला पाइये जैसा कि तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान, ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स दिन रात में बारह रक्अ़तें पढ़ेगा उस के लिये जन्नत में एक घर बना दिया जाएगा, चार रक्अ़त नमाज़ ज़ोहर से पहले और दो रक्अ़त ज़ोहर के बा'द और दो रक्अ़त मग़रिब के बा'द और दो रक्अ़त

इशा के बा'द और दो रक्अ़त नमाज़े फ़ज्र से पहले हैं (कुल बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हैं)। (ترمذی،1/424،حدیث:415)

एक ह़दीसे पाक में है : जिस ने ज़ोह्र से पहले चार और बा'द में चार पर मुह़ाफ़ज़त (या'नी पाबन्दी इख़्तियार) की, **अल्लाह** पाक उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा। (ترمذی،1/435،حدیث:428)

ह़ज़रते अ़ल्लामा त़ह़त़ावी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ऐसा शख़्स बिल्कुल ही आग में दाख़िल न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और जो उस पर मुत़ालबात हैं **अल्लाह** पाक उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मत़लब है कि उसे ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो। (حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار،1/284) अ़ल्लामा शामी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उस के लिये ख़ुश ख़बरी है कि सआ़दत पर उस का ख़ातिमा होगा और वोह दोज़ख़ में न जाएगा। (ردالمختار،2/547)

﴾7﴿ नमाज़े तहज्जुद

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि जब नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने में तशरीफ़ लाए तो मैं ने सब से पहले जो ह़दीसे पाक नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी वोह येह थी कि ऐ लोगो ! तुम सलाम को फैलाओ, खाना खिलाओ, रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करो और रातों को जब सब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ो। तुम ऐसा करोगे तो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे। (ترمذی،4/219،حدیث:2493)

नमाज़े तहज्जुद की बरकत से बख़्शिश

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के ग्यारहवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ को इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : ऐ अबुल क़ासिम (येह आप की कुन्यत थी) ! बा'दे

वफ़ात आप के साथ क्या मुआ़मला हुवा ? फ़रमाया : हमें सिर्फ़ उन छोटी छोटी रक्अ़तों ने फ़ाएदा दिया जो हम सहर के वक़्त अदा किया करते थे।

(حلیۃ الاولیاء،10/276،رقم:15220)

﴾8﴿ नमाजे़ तहि़य्यतुल वुज़ू

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाजे़ फ़ज्र के वक़्त ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया कि ऐ बिलाल ! तुम ने इस्लाम में सब से ज़ियादा उम्मीद वाला जो अ़मल किया है उस को मुझ से बयान करो इस लिये कि मैं ने जन्नत में तुम्हारे चलने की आवाज़ अपने आगे सुनी है। तो ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : मेरा सब से ज़ियादा उम्मीद वाला अ़मल येही है कि मैं दिन या रात की किसी घड़ी में जब भी वुज़ू करता हूं तो मेरे मुक़द्दर में जो नमाज़ लिखी हुई है उस को उस वुज़ू से पढ़ लेता हूं। (بخاری،1/390،حدیث:1149)

मुफ़्ती अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का जन्नत में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे आगे चलना येह कोई बे अदबी की बात नहीं। बादशाह के कुछ ख़ादिम बादशाह के पीछे पीछे और कुछ ख़ादिम मसलन नक़ीब और चोबदार आगे आगे चला करते हैं और येह दोनों बादशाह के बा अदब ख़ादिम ही हुवा करते हैं। इस ह़दीस से ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बुलन्द दरजे का पता चलता है कि वोह जन्नत में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नक़ीब बन कर हु़ज़ूर के आगे आगे हु़ज़ूर की आमद आमद का ए'लान करते हुए चलेंगे और ह़दीस से ज़ाहिर होता है कि येह बुलन्द रुत्बा इन को "तहि़य्यतुल वुज़ू" की बदौलत मिला है। (बिहिश्त की कुन्जियां, स. 77)

मदनी फूल : वुज़ू के बा'द आ'ज़ा ख़ुश्क होने से पहले दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है।

﴾9﴿ ज़कात

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में गाउं में रहने वाले एक सह़ाबी ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : किसी ऐसे अ़मल पर मेरी रहनुमाई करें कि मैं जब वोह अ़मल कर लूं तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊं। तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम **अल्लाह** पाक की इ़बादत करो, उस के साथ किसी को शरीक मत ठहराओ, फ़र्ज़ नमाज़ को क़ाइम करो, ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। तो उन्हों ने येह सुन कर अ़र्ज़ की : उस ज़ात की क़सम है जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है कि मैं इस से ज़ियादा नहीं करूंगा। फिर जब वोह पीठ फेर कर चल दिये तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिसे येह पसन्द हो कि वोह किसी जन्नती आदमी को देखे तो वोह इस आदमी को देख ले।

(بخاری، 1/472، حدیث:1397)

﴾10﴿ रोज़ा

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को "बाबुर्रय्यान" कहा जाता है। उस में से क़ियामत के दिन रोज़ादार (जन्नत में) दाख़िल होंगे, रोज़ादारों के सिवा कोई भी उस दरवाज़े से (जन्नत में) दाख़िल नहीं होगा। कहा जाएगा : रोज़ादार कहां हैं ? फिर वोह खड़े होंगे और उन के इ़लावा कोई भी उस में से दाख़िल नहीं होगा। जब येह लोग दाख़िल हो जाएंगे तो येह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा।

(بخاری، 1/625، حدیث:1896)

﴾11﴿ ह़ज

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक उ़म्रह दूसरे उ़म्रे तक इन दोनों के दरमियान के

गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और ह़ज्जे मबरूर की जन्नत के सिवा कोई जज़ा ही नहीं।

(بخاری،1/586،حدیث:1773)

﴾12﴿ दुन्या में रहते हुए अपना जन्नती मक़ाम देखने का वज़ीफ़ा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रोज़ाना दुरूदे पाक पढ़ते रहिये, अगर थोड़ी सी तवज्जोह कर के और वक़्त निकाल कर रोज़ाना एक हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ लिया जाए तो ऐसे ख़ुश नसीब पर कैसा करम होता है पढ़िये : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।

(الترغیب فی فضائل الاعمال لابن شاہین، ص14، حدیث:19)

जन्नत में मुझे ऐसी जगह प्यारे ख़ुदा दे   हर वक़्त जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 120)

जन्नत में औ़रतों को क्या मिलेगा ?

जन्नत का बयान पढ़ या सुन कर उ़मूमन औ़रतों को ख़याल आता है कि औ़रतों को जन्नत में क्या मिलेगा ? या ऐसी ख़वातीन जो शादी से पहले ही फ़ौत हो गईं वोह जन्नत में जाने की सूरत में किस त़रह़ रहेंगी तो इस बारे में तफ़्सील येह है :

﴾1﴿ औ़रतों को जन्नत में उन के वोह शौहर मिलेंगे दुन्या में वोह जिन के निकाह़ में थी बशर्ते़ कि शौहर भी जन्नती हों।

﴾2﴿ अगर किसी औ़रत का शौहर जन्नत में न जा सका तो वोह किसी और जन्नती मर्द के निकाह़ में दे दी जाएगी। इसी त़रह़ जो औ़रतें कुंवारी फ़ौत हुईं वोह भी जन्नत में किसी मर्द की ज़ौजिय्यत में चली जाएंगी।

इस के इलावा जन्नत की ने'मतें मसलन मह़ल्लात, लिबास, ग़िज़ाएं और ख़ुश्बूयात वग़ैरा मर्द व औ़रत में मुश्तरक हैं।

(फ़तावा अहले सुन्नत, सिल्सिला नम्बर 7, स. 24)

﴾3﴿ अगर कोई औ़रत यके बा'द दीगरे एक से ज़ियादा मर्दों के निकाह़ में आई तो इस में दो क़ौल हैं : एक क़ौल के मुत़ाबिक़ जिस के निकाह़ में सब से आख़िर में थी जन्नत में उसी के साथ होगी जैसा कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : औ़रत जन्नत में अपने उस शौहर के निकाह़ में दी जाएगी जो दुन्या में उस का सब से आख़िरी शौहर था। (مسند الشامیین، 2/359، حدیث:1496)

दूसरा क़ौल येह है कि जिस का अख़्लाक़ ज़ियादा अच्छा होगा उसे मिलेगी जैसा कि तमाम मुसल्मानों की प्यारी अम्मीजान, ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बा'ज़ औ़रतें दुन्या में दो, तीन या चार शौहरों से (यके बा'द दीगरे) शादी करती हैं फिर मरने के बा'द वोह जन्नत में इकट्ठे हों तो वोह औ़रत किस शौहर के लिये होगी ? इर्शाद फ़रमाया : उसे इख़्तियार दिया जाएगा और जिस ख़ावन्द का अख़्लाक़ दुन्या में सब से अच्छा होगा वोह उसे इख़्तियार करेगी। (معجم کبیر، 23/368، حدیث:870)

इन दोनों अह़ादीस व अक़्वाल में टकराव नहीं जैसा कि ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जिस औ़रत ने एक के बा'द एक कर के कई निकाह़ किये हों और हर शौहर ने उस को त़लाक़ दे दी हो मगर आख़िरी ख़ावन्द ने उसे त़लाक़ न दी हो और वोह इस के निकाह़ में फ़ौत हुई तो इस सूरत में वोह जन्नत में आख़िरी ख़ावन्द के निकाह़ में होगी जैसा कि पहली ह़दीस में है। दूसरी सूरत येह है कि उस ने कई निकाह़ किये, हर शौहर ने उस को त़लाक़ दे दी हो और जब वोह फ़ौत हुई तो किसी के निकाह़ में न थी तो सिर्फ़ इसी

हालत में उसे इख़्तियार दिया जाएगा और जिस ख़ावन्द का अख़्लाक़ दुन्या में सब से अच्छा होगा वोह उसे इख़्तियार करेगी। (فتاویٰ حدیثیہ، ص70 ماخوذاً)

दुन्या में जन्नत से आई हुई 18 चीजें

﴾1﴿ हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरे घर और मिम्बर की दरमियानी जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(بخاری، 1/402، حدیث:1195)

﴾2 ता 5﴿ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि चार बरकत वाली चीज़ें **अल्लाह** पाक ने आस्मान से नाज़िल फ़रमाई हैं : लोहा, आग, पानी, नमक।

(تفسیر صاوی، پ27، الحدید:25، 6/2112 ملتقطاً)

चार जन्नती पहाड़ और नहरें

﴾6 ता 13﴿ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : चार नहरें जन्नत की नहरों में से हैं : नील, फ़ुरात, सैह़ान और जैह़ान और चार पहाड़ जन्नत के पहाड़ों में से हैं उहुद, तूर, लुबनान और वरिक़ान। (البدور السافرۃ، ص529)

﴾14 ता 17﴿ जब ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो ह़जरे अस्वद, मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का अ़सा, लोहा और हर क़िस्म के बीज जन्नत से साथ लाए थे। (تفسیر صاوی، پ27، الحدید:25، 6/2112)

﴾18﴿ मे'राज की सुवारी बुराक़ जन्नत से आई थी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/137 माख़ूज़न)

जिब्रीले अमीन बुराक़ लिये जन्नत से ज़मीं पर आ पहुंचे
बारात फ़िरिश्तों की आई मे'राज को दूल्हा जाते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 287)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

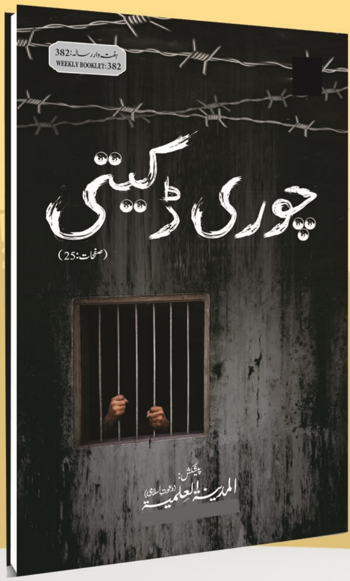

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025